॥ सरलआकाशभैरवपूजा ॥

॥ आकाशभैरवतत्वविमर्श ॥

आकाशभैरवकल्प के अनुसार जगत की रक्षा के लिए महेश्वर ने अपने आप को तीन स्वरूप मे विभक्त किया जो क्रमशः
१) आकाशभैरव २) आशुगरुड़ ३) शरभ थे ।
इन्ही तीनो स्वरूपो को तन्त्रशास्त्र में शालुव , पक्षीराज और शरभ के नाम से वर्णित किया गया है। आकाशभैरव क्षिप्र प्रसन्न होने वाले देवता है जो अपने उपासको की सदैव रक्षा करते है । नेपालदेश में आज भी इनकी उपासना का प्रचलन है । नेपालदेश में किम्वदंती है कि आकाशभैरव नेपाल के पहले राजवंश के प्रथम राजा यलाम्बर है जो की महाभारत युद्ध में श्रीकृष्ण के छल से युद्धपूर्व ही हत किये गए थे । श्रीकृष्ण के द्वारा रण भूमि की पूजा हेतु किसी महावीरयोद्धा की बलि मांगी गयी जिसमे यलाम्बर ने अपना शिर रणांगन की पूजा समर्पित किया । यलाम्बर के आत्मबलिदान से प्रसन्न श्रीकृष्ण ने उनके शिरभाग की आकाशभैरवरूप में प्रतिष्ठा की तथा अपने देश में विशेषरूप से पूजित होने का वर दिया । श्रीआकाशभैरव की विशद उपासना का वर्णन आकाशभैरवकल्प में हैं ।

❋साधक शुद्ध दो रक्तवस्त्र (रक्तधोती तथा रक्त उत्तरीय पहनकर) रक्त कम्बल या कुश या अन्य प्रकार के शास्त्र विहित आसान पर बैठे ।

❋**ॐ ह्लीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः॥** कहकर आसान का पूजन करे ।

❋**ॐ आकाशभैरवाय नमः ॥** इस मंत्र से भस्म के त्रिपुण्ड्र सर ,कण्ठ ,हृदय ,दोनों बाहुओं और नाभि पे धारण करे ।

❋**ॐ आकाशभैरवाय नमः ॥** इस मंत्र से रुद्राक्ष की माला वा एक रुद्राक्ष या एक से ज्यादा रुद्राक्ष धारण करे ।

❋**ॐ आकाशभैरवाय नमः** ॥ कहकर तीन बार आचमन करे ।

❋**ॐ आकाशभैरवाय नमः ॥** कहकर तीन बार प्राणायाम करे ।

❋**ॐ आकाशभैरवाय नमः ॥** कहकर भैरवपवित्र वा स्मार्तपवित्र वा सोने /चाँदी/ताम्बे की अंगूठी (बिना नग वाली) धारण करे ।

❋तदनन्तर श्रीआकाशभैरव की पूजा का संकल्प करे ।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु: श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे

भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते अमुकक्षेत्रे अमुकनगरे अमुकग्रामे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरी शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगर्णाविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् श्रीआकाशभैरवप्रीत्यर्थं यथोपचारैः नाममंत्रोक्तविधानेन श्रीआकाशभैरव पूजनमहं करिष्ये ॥

❋निम्न मन्त्र के द्वारा श्रीआकाशभैरव के सिंहासन की पूजा करे।

ॐ आकाशभैरवसिंहासनाय नमः ॥ (श्रीआकाशभैरव चतुसिंह के द्वारा वहन किये गए पर्यंक पर स्थित हैं।)

❋ निम्न मन्त्र के द्वारा श्रीआकाशभैरव का ध्यान करे

"सहस्रपाणिपद्वक्त्रं सहस्रत्रयलोचनम् ।
सर्वाभीष्टप्रदं देवं ध्यायेदाकाशभैरवम् ॥ "

❋निम्न मन्त्र से श्रीआकाशभैरव का आवाहन करे। (अगर प्रतिमा प्राण प्रतिष्ठित हो तो यहाँ पुष्पांजलि देवे)

ॐ शूलहस्ताय नमः आवाहयामि ॥

❋पार्श्वभागो में आकाशभद्रकाली तथा भीमसेन का भी आवाहन करे। **ॐ आकाशभद्रकाल्यै नमः आवाहयामि ॥ ॐ भीमसेनाय नमः आवाहयामि॥**

❋निम्न मंत्र से रक्तपुष्प वा दर्भ का आसान समर्पित करे। **ॐ नीलरूपाय नमः आसनं समर्पयामि ॥**

❋निम्न मंत्र से श्रीआकाशभैरव के चरणों पर पाद्य समर्पित करे। **ॐ उर्ध्वकेशाय नमः पादयो: पाद्यं समर्पयामि ॥**

❋निम्न मंत्र से श्रीआकाशभैरव के शिरभाग पर अर्घ्य समर्पित करे। **ॐ आपदुद्धारणाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि ॥**

❋निम्न मंत्र से श्रीआकाशभैरव के मुख मे आचमनीय जल समर्पित करे। **ॐ निशीनाथाय नमः आचमनीयं समर्पयामि ॥**

❋निम्न मन्त्र से श्रीआकाशभैरव को जलस्नान करावे।

ॐ नग्नरूपाय नमः स्नानं समर्पयामि॥

❋निम्न मंत्र से आचमनीय जल समर्पित करे।

ॐ कपालहस्ताय नमः स्नानान्तरं आचमनीयं समर्पयामि॥

❋निम्न मन्त्र से दो रक्तवस्त्र वा दो रक्तसूत्र वा रक्ताक्षत श्रीआकाशभैरव को समर्पित करे।

ॐ सर्पभूषणाय नमः वस्त्रं समर्पयामि॥

❋निम्न मंत्र से गन्ध (रक्तचन्दन) समर्पित करे।

ॐ वह्निनेत्राय नमः गन्धान् धारयामि॥

❋निम्न मंत्र से अक्षता समर्पित करे।

ॐ चंद्रार्द्धधारिणे नमः गंधस्योपरि अक्षतान् समर्पयामि॥

❋निम्न मंत्र से रक्तपुष्प समर्पित करे।

ॐ शान्ताय नमः पुष्पं समर्पयामि॥

❋पार्श्वभागभाग में आकाशभद्रकाली तथा भीमसेन की भी गन्धाक्षत से पूजा करे।

ॐ आकाशभद्रकाल्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः॥ ॐ भीमसेनाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः॥

❋(अष्टोत्तरशत वा अष्टोत्तरसहस्र नामार्चनं कृत्वा) यहाँ पर समयानुसार अष्टोत्तरशतनाम या सहस्रनाम से पूजा करे।

❋निम्न मंत्र से धुप (घृत+गुग्गुलु) सर्मपित करे।

ॐ भूतनाथाय नमः धूपं आघ्रापयामि ॥

❋ निम्न मंत्र से कपिलाघृत / महिषीघृत या कटु तैल का दीप सर्मपित करे। **ॐ भीमाय नमः दीपान्दर्शयामि ॥**

❋निम्न मंत्र से शुद्ध यथाशक्ति सात्विकनैवेद्य समर्पित करे।

ॐ त्रैलोक्यरक्षकाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि ॥

❋निम्न मंत्र से नैवेद्यानन्तर जल समर्पित करे।

ॐ अनादिभूताय नमः नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ॥

❋निम्न मंत्र से ताम्बूल (पान का बीड़ा) समर्पित करे।

ॐ नीलकंठस्वरूपाय नमः ताम्बूलं निवेदयामि ॥

❋निम्न मंत्र से दक्षिणा (हिरण्य/रजत/ताम्र/) समर्पित करे।

ॐ आकाशभैरवाय नमः दक्षिणां समर्पयामि ॥

❋निम्न मंत्र से यथालब्ध ऋतुफल समर्पित करे।

ॐ आकाशभैरवाय नमः ऋतुफलं समर्पयामि ॥

❋निम्न मंत्र से श्रीआकाशभैरव की आरती करे।

ॐ आकाशभैरवाय नमः नीराजनं समर्पयामि ॥

❋निम्न मंत्र से पुष्पांजलि दे।

ॐ आकाशभैरवाय नमः मन्त्रपुष्पञ्जलिं समर्पयामि ॥

❋निम्न मंत्र से श्रीआकाशभैरव की प्रदक्षिणा करे।

ॐ आकाशभैरवाय नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि॥

❋निम्न मंत्र से श्रीआकाशभैरव को नमस्कार करे।

ॐ आकाशभैरवाय नमः नमस्कारान् समर्पयामि॥

❋पूजा की बची हुई सामग्री को निर्माल्य देवता को समर्पित करे। ॐ उच्छिष्टभैरवाय नमः॥

❋निम्नमंत्र से क्षमाप्रार्थना करे॥

ॐ आकाशभैरवाय नमः क्षमस्व क्षमस्व॥

❋उद्धरणी से जल लेकर श्रीआकाशभैरव के दाहिने हाथ मे पूजाफल का सर्मपण करे॥

ॐतत्सत्श्रीआकाशभैरवार्पणमस्तु॥

Compiled by-Animesh Nagar ,
animeshnagarblog.wordpress.com ,
Email-darkdevil114@rocketmail.com